३१

सुहोत्रो भरद्वाजः।इन्द्रः। त्रिष्टुप्, ४ शक्करी ।

**अभूरेको रयिपते रयीणामा हस्तयोरधिथा इन्द्र कृष्टीः।**
**वि तोके अप्सु तनये च सूरेऽवोचन्त चर्षणयो विवाचः॥ ६.०३१.०१**

रयीणां रयिपते- सम्पत्पालक। एकः- असहायः। अभूः- अभवः। हस्तयोः- भुजयोः। इन्द्र। कृष्टीः- प्रजाः। अधिथा- आधत्से। सूरे- प्रेरक। तोके तनये- धर्मसन्ततिनिमित्ते। अप्सु- जीवोदकनिमित्ते। चर्षणयः- प्रजाः। विवाचः- नानास्तुतीः। वि- विशेषेण। अवोचन्त- वदन्ति ॥१॥

**त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वाच्युता चिच्च्यावयन्ते रजांसि।**
**द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं दृळ्हं भयते अज्मन्ना ते॥ ६.०३१.०२**

इन्द्र। त्वद्भिया- तव भीत्या। विश्वा- सर्वे। अच्युता- च्युतिरहिताः। पार्थिवानि- भौमाः। रजांसि- लोकाः। चित्- अपि। च्यावयन्ते- कम्पन्ते। ते- तव। आ अज्मन्- आगमने। द्यावा क्षामा- द्यावापृथिव्यौ। पर्वतासः- गिरयो मेघा वा। वनानि- अरण्यानि। विश्व्वम्- सर्वम्। दृळ्हम्- दृढम्। भयते- कम्पते ॥२॥

**त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्राशुषं युध्य कुयवं गविष्टौ।**
**दशं प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविवे रपांसि॥ ६.०३१.०३**

त्वम्। कुत्सेन- कर्मशीलेन त्वदुपासकेन। कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिति श्रुतावेवमेव दृश्यते । अशुषम्- शोषयितुमशक्यम्। शुष्णम्- शोषकम्। कुयवम्- कुमिश्रकम्। गविष्टौ- चिद्रश्मीनामेषणे। इन्द्र। अभि युध्य- अयुध्यः। दश- अदशः। अवधीः। दंश दशने। प्रपित्वे- प्रपतने। सूर्यस्य चक्रम्- कालचक्रम्। मुषायः- अपहृतवान्। रपांसि- पापिनः। अविवेः- अपगमयः ॥३॥

Dr. Ranganji

**त्वं शतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः।**

**अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते सुतक्रे भरद्वाजाय गृणते वसूनि॥ ६.०३१.०४**

त्वम्। दस्योः- स्तेनस्य। शम्बरस्य- मेघोपलक्षितजडोन्मुखभावनस्य। शतानि- बहूनि। पुरः- पुराणि बन्धनानि। अप्रतीनि- अप्रतिगतानि। अव जघन्थ- नाशितवान्। शचीवः- प्रज्ञावान्। शच्या- प्रज्ञया। सुतक्रे- हे रसक्रीतेन्द्र। सुन्वते- रसनिष्पादकाय। दिवोदासाय- देवसेवकाय। भरद्वाजाय- सम्पादितहविष्काय। गृणते- स्तुवते। वसूनि- सम्पदः। अशिक्षः- दत्तवान्॥४॥

**स सत्यसत्वन्महते रणाय रथमा तिष्ठ तुविनृम्ण भीमम्।**

**याहि प्रपथिन्नवसोप मद्रिक्प्र च श्रुत श्रावय चर्षणिभ्यः॥ ६.०३१.०५**

सः- असौ त्वम्। सत्यसत्वन्- अवितथबल। महते। रणाय- युद्धाय। तुविनृम्ण- प्रभूतबल। भीमम्- भयङ्करम्। रथम्। आ तिष्ठ- अधितिष्ठ। प्रपथिन्- प्रकर्षाध्वनि। अवसा- रक्षितुम्। मद्रिक्- मदभिमुखः। याहि- आगच्छ। श्रुत- श्रुतिप्रसिद्ध। चर्षणिभ्यः- प्रजाभ्यः। प्र- प्रकर्षेण। श्रावय- श्रुतिं श्रावय॥५॥

Dr. Rangani